भारत की कम्युनिस्ट पार्टी (माओवादी)
केन्द्रीय कमिटी

Date : 1 March 2014

i s l foKfIr

Hkkjr dh Økfr ds urk dkejsM ,l, jÅQ dh kgknr ds volj ij Hkkdik ¼ekvksoknh½ dh dsnh; desVh dk lans'k

भारत की क्रांति के नेता कामरेड एसए रऊफ की 9 फरवरी, 2014 को 80 वर्ष से भी ज्यादा की उम्र में तीव्र अस्वस्थता के चलते शहादत हुई। आन्ध्रप्रदेश राज्य के अनंतपुर जिले के कदिरि कस्बा उनका जन्म स्थल है। उन्होंने एलएलबी की पढ़ाई की थी। 1950 कि दशक से वे भारत के कम्यूनिस्ट आन्दोलन का हिस्सा बन गये थे। भाकपा के संशोधनवाद, माकपा के नव संशोधनवाद के खिलाफ सैद्धांतिक संघर्ष करने वालों में कामरेड रऊफ भी एक थे। भाकपा (माओवादी) की केंद्रीय कमेटी उन्हें शीष झुकाकर विनम्र श्रद्धांजलि अर्पित करती है।

1967 में प्रारंभ नक्सलबाड़ी के किसान सशस्त्र संघर्ष भारत के क्रांतिकारी आन्दोलन के इतिहास में ही एक बड़ा मोड़ था। 1948 से 1951 तक संचालित वीर तेंलगाना सशस्त्र संघर्ष, पुनप्रा वायलार, तेभागा आन्दोलनों की क्रांतिकारी विरासत को जारी रखते हुए, चेतनापूर्वक व ठोस लक्ष्य के साथ मार्क्सवाद–लेनिनवाद–माओ विचारधारा (आज के माओवाद) के मार्गदर्शन में प्रांरभ होकर आज पर्यंत जारी किसान सशस्त्र क्रांति की शुरुआत नक्सलबाड़ी ही थी। संशोधनवादी नेतृत्व के खिलाफ विद्रोह करके पार्टी में तीखा सैद्धांतिक संघर्ष चलाने के फलस्वरूप ही नक्सलबाड़ी संघर्ष विकसित हुआ था। विगत के तेंलगाना सशस्त्र संघर्ष को फिर से देश के एजेण्डे पर ला खड़ा करने वाला संघर्ष, नक्सलबाड़ी ही थी। नक्सलबाड़ी के पहले भारत की कम्यूनिस्ट पार्टी में सैद्धांतिक रूप से भारत की क्रांति की रणनीति के तौर पर इस बात का कभी अनुमोदन नहीं हुआ था कि व्यापक देहाती इलाकों जहां दुश्मन कमजोर है, में आधार इलाकों का निर्माण करके, क्रमशः उनका विस्तार करते हुए आखिर में शहरों को घेर कर कब्जा करने के द्वारा राजसत्ता हासिल करने के दीर्घ कालीन लोक युद्ध के रास्ते देशव्यापी विजय हासिल करना ही क्रांति का केंद्रीय व मुख्य कर्तव्य है। हमारे देश में अपनी जड़े जमाये संशोधनवाद पर पहला घातक प्रहार था, नक्सलबाड़ी। उसी से संशोधनवाद की नींव हिल गयी। नक्सलबाड़ी की किसान क्रांति ने समूचे देश की पीड़ित जनता को जितना उत्साहित किया था, उतना ही शोषक वर्गों को बेचैन किया था। किसान मुक्ति के लिए नक्सलबाड़ी ही एकमात्र रास्ता है, यह समझदारी उत्पीड़ित किसानों में विकसित होने लगी। दिन–ब दिन बढ़ती बेरोजगारी व आर्थिक संकट से ग्रसित मजदूर–किसानों के साथ–साथ शहरी मध्य वर्ग में उस संघर्ष से जो उत्साह व उमंग पैदा हुआ था, वह भारत के क्रांतिकारी आन्दोलन के इतिहास में अभूतपूर्व था। नक्सलबाड़ी की चिंगारी बहुत कम समय में ही देश के कई कोनों में फैल गयी थी। श्रीकाकुलम, मुषाहरि, बीरभूम, देब्रा, गोपी वल्लभपुर, लखिमपुर, खेरी के किसान सशस्त्र संघर्षो ने देश के शोषक वर्गो में कंपकंपी पैदा की।

संशोधनवादी नेतृत्व के खिलाफ विद्रोह करके नक्सलबाड़ी के उभार का मजबूती से समर्थन करके यह कहते हुए कि 'नक्सलबाड़ी एक ही रास्ता', आन्ध्रप्रदेश में क्रांतिकारी आन्दोलन का नेतृत्व करने वाले कम्यूनिस्ट क्रांतिकारियों में से कामरेड रऊफ एक थे। तब तक वकालत करते हुए खुली क्रांतिकारी गतिविधियों में लिप्त कामरेड रऊफ अपना पेशा छोड़कर भूमिगत हो गये थे। पहले वे कामरेड चारू मजुमदार के नेतृत्व में 1968 में गठित एआईसीसीआर में शामिल होकर आन्ध्रप्रदेश राज्य समन्वय इकाई के राज्य कमेटी सदस्य बने थे। कामरेड सीएम के नेतृत्व में गुत्तिकोंडा बिलम में आयोजित आन्ध्रप्रदेश के नेतृत्वकारी प्रतिनिधियों की बैठक में शामिल होकर आन्ध्रप्रदेश राज्य सांगठनिक कमेटी का सदस्य चुने गये थे। बाद में 22 अप्रैल, 1969 को स्थापित भारत की कम्यूनिस्ट पार्टी (मार्क्सवादी–लेनिनवादी) में शुरू से ही रहे। नागिरेड्डी, देवुला पल्ली, पुल्ला रेड्डी के दक्षिण पंथी अवसरवादी व संशोधनवादी सिद्धांतों के खिलाफ सैद्धांतिक व राजनीतिक संघर्ष को संचालित करने वाले प्रमुखों में कामरेड रऊफ

भी एक थे। मई, 1970 में आन्ध्रप्रदेश में सफलतापूर्वक संपन्न भाकपा (मा–ले) के पहले राज्य अधिवेशन में वे राज्य कमेटी सदस्य चुने गये थे। 1972 में जब पार्टी में विभाजन हुआ था, तब सीओसी सीपीआई (एम–एल) के पक्ष में रहकर वे आन्ध्रप्रदेश प्रोविन्शियल कमेटी (राज्य कमेटी) सदस्य बने रहे। वे 1973 में बंगाल में गिरफ्तार हुए थे। 1977 में आन्ध्रप्रदेश प्रोविन्शियल कमेटी ने बदली हुई परिस्थितियों के अनुरूप कार्यनीति तय करते हुए अगस्त प्रस्ताव पारित किया था। तब कामरेड रऊफ उस प्रस्ताव का विरोध करके पार्टी से बाहर चले गये थे। आन्ध्रप्रदेश प्रोविन्शियल कमेटी विशेषकर रायल सीमा के कामरेडों ने कामरेड रऊफ से अपील की थी कि वे कार्यनीति संबंधित अपने राय को पार्टी में बहस के लिए रखे और दो लाइनों के बीच संघर्ष को चलावें। वे नहीं माने और पार्टी छोड़कर चले गये। आन्ध्रप्रदेश राज्य में अलग से एक और क्रांतिकारी पार्टी का उन्होंने गठन किया। इससे पार्टी में विभाजन हुआ।

1979 में वे सीपीआई (एम–एल) की केरल राज्य कमेटी के साथ मिलकर सीपीआई (एम–एल) सेंट्रल री–आर्गनाइजिंग कमेटी (सीआरसी) की स्थापना में भागीदार बन गये। वे उसमें सीआरसी सदस्य थे। अंतर्राष्ट्रीय कम्यूनिस्ट आन्दोलन (रिम) की तीन संस्थापक सदस्य पार्टियों में से सीआरसी भी एक थी। बाकी दो संस्थापक पार्टियां है– पेरू कम्यूनिस्ट पार्टी एवं रिवोल्यूशनरी कम्यूनिस्ट पार्टी (अमेरिका)। हालांकि सीआरसी ने 1980 के दशक में आन्ध्रप्रदेश में किसान सशस्त्र संघर्षो के निर्माण के कई प्रयास किये लेकिन जनाधार नहीं बढ़ाने के कारण वह उसमें सफल नहीं हो सकी। जनता के बीच जाने में विफल होने के कारण पार्टी का विस्तार नहीं हो सका और आन्दोलन को धक्का लगा।

सीआरसी, सीपीआई (एम–एल) के तत्कालीन महासचिव वेणु के दक्षिण पंथी अवसरवादी व संशोधनवादी सिद्धांत का विरोध करके कामरेड रऊफ ने उनसे अलग होकर क्रांतिकारी लाइन अपनायी और उन्होंने उस पार्टी को सीपीआई (एम–एल) रेड फ्लैग के रूप में पुनर्निर्माण करने में अपनी भूमिका अदा की और 1998 तक उसके सीसी सदस्य रहे। जब रेड फ्लैग के महासचिव के द्वारा पार्टी में दक्षिण पंथी अवसरवादी, संशोधनवादी लाइन सामने लायी गयी थी, कामरेड रऊफ ने उसके खिलाफ संघर्ष करके सही क्रातिकारी लाइन के साथ पार्टी में मौजूद क्रांतिकारियों को संगठित किया। बाद में एमयूसी, सीपीआई (एमएल) महाराष्ट्र, व केरल की इकाइयों के साथ मिलकर 1999 में सीपीआई (एम–एल) नक्सबाड़ी का गठन किया गया था।

कॉ. रऊफ 2008 तक इस एकीकृत पार्टी का महासचिव रहे। उन्होंने इस पार्टी को एक क्रांतिकारी पार्टी के रूप में खड़ा करने का प्रयास किया। यह पार्टी सिकाम्पोसा (को–ऑर्डिनेशन कमेटी ऑफ माओइस्ट पार्टीज एंड ऑर्गनाइजेशन्स ऑफ साउथ एशिया) की संस्थापक सदस्या है। क्रांतिकारी प्रचार के कामकाज में इसने अच्छी भूमिका अदा की। अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर आरसीपी (अमेरिका) नेता बाब अवेकिन व नेपाल की यूसीपीएन (माओवादी) के प्रचण्ड व बाबूराम भट्टाराई के द्वारा सामने लाई गयी संशोधनवादी लाइन का पर्दाफाश करने में रिम व सिकांपोसा ने मुख्य भूमिका निभायी।

2008 के बाद कामरेड रऊफ गंभीर रूप से अस्वस्थ हो गये। कामरेड रऊफ ने इस विश्वास व आकांक्षा के साथ काम किया था कि भारत में कभी न कभी एक सही माओवादी लाइन के इर्द–गिर्द सभी क्रांतिकारी एकताबद्ध होंगे। आन्दोलन के कई उतार–चढ़ावों, शोषक–शासक वर्गों के सरकारी दमन की परवाह किये बगैर क्रांति के प्रति अटूट विश्वास, दृढ़ निश्चय व संकल्प के साथ कामरेड रऊफ आखिरी सांस तक एक क्रांतिकारी नेता के रूप में डटे रहे। दीर्घकालीन लोक युद्ध के जरिए भारत की नवजनवादी क्रांति को सफल बनाने वे अनवरत प्रयासरत रहे। अपने द्वारा निर्मित पार्टी को माओवादी क्रांतिकारी लाइन पर मजबूती से खड़ा करके देश में कार्यरत सही क्रांतिकारियों की एकता को साकार करने के प्रयास में ही वे शहीद हुए। 'नक्सलबाड़ी एक ही रास्ता' नारे को उन्होंने सार्थक बनाया।

कामरेड रऊफ की शहादत को ऊंचा उठाते हुए हमारी सीसी, सीपीआई (माओवादी) उनकी मौत के प्रति गहरी संवेदना प्रकट करती है। उनके परिवारजनों के दुख में शामिल होती है। नवजनवादी समाज, समाजवाद–साम्यवाद की स्थापना के लक्ष्य के उनके सपने को साकार करने आखिरी तक संघर्ष करते रहने का इस मौके पर एक बार और शपथ लेती है।

ØkfUrdkjh vfHkoknu d lkFk

Abhay

iozDrk

dUnzh; dfeVh

Hkkdik ¼ekvksoknh½